CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2020

चिनारे

देवराज

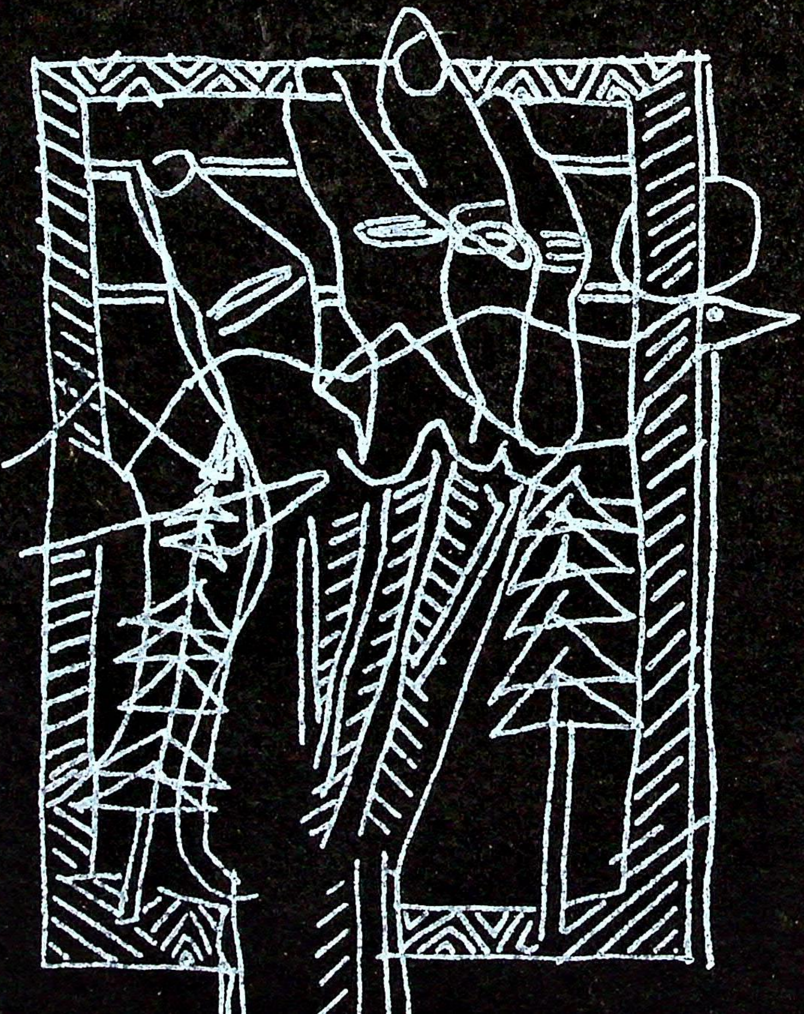

. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-

चिनार

देवराज

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

चिनार (कविता-संग्रह) / कवि : देवराज / संस्करण : प्रथम, अप्रैल 1992 / प्रकाशक : सौम्या प्रकाशन, 21–चौक, नजीबाबाद-246763 (उ० प्र०) / मुद्रक : मॉडर्न प्रेस, महात्मा गांधी एवेन्यु, इम्फाल–795001 (मणिपुर)। सर्वाधिकार : कवि के नियन्त्रण में।

मूल्य : ६०.००

आवरण : हरिपाल त्यागी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

अपने प्रारम्भिक कवि-मित्रों–
देव 'भारती'
सोज नजीबाबादी
मुकेश 'सुमन'
राजकुमार 'राज'
– के लिए

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

९ / चिनार
१२ / नया आल्हा
१५ / भाषण देने वाले
१७ / हिरोशिमा की औरत
१९ / इतिहास
२७ / मेरे बच्चे के साथ
२९ / शीर्षक
३२ / पुनर्विचार
३४ / किताबों के चेहरे
३६ / संविधान
३९ / धमनियों का लहू
४३ / एक पुरानी कहानी
४९ / दंगा करता देश
५१ / कुर्सी-दौड़
५४ / बकरी
५५ / देश
५६ / अक्कड़-बक्कड़
५८ / मजदूर
६० / प्यार की कविताएँ
६२ / माँ का बयान

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

६६ / इबारत और आकाश
६८ / उत्सव
७० / वह
७२ / आँखें
७४ / तिरंगा : बिल्ली : औरत
७८ / लोग
७९ / रेखाचित्र
८१ / राजा
८३ / राक्षस
८७ / भाषा : स्त्री : कवि
९० / बच्चे
९३ / नन्हीं बालिका
९४ / देश
९६ / मेरा दौर
९८ / अक्षरों की आँख में है आग
१०१ / तुम्हारे नाम
१०३ / घाटी का गाँव
१०५ / मन-गुलाल
१०७ / रंगों की सीपी
१०९ / प्रकृति के रंग
११३ / नम्बूल
११५ / लोकताक
११७ / थोइबी
११९ / खोङ्जोम तुरेल
१२३ / इम्फाल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

शब्द चेहरे हो गए हैं
यह बताने के लिए–
"अब नहीं तैयार हम हैं
सर झुकाने के लिए।"

चिनार

(१९७० से १९९२ तक की रचनाओं में से)

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

चिनार

चिनार के पेड़
अभी मत दाहो अपने को
अभी हम व्यस्त हैं
बड़े-बड़े बांध बनाने का
विरोध करने वाली
जनता पर गोलियाँ बरसाने में।
अभी हम जा रहे हैं
उस ओर
जहाँ कुछ लोग
बाढ़ में गले-गले डूब
रस्सियों के सहारे
छप्परों को हवा में उछाले रखने की
कोशिश कर रहे हैं
और बूढ़ी महिलाएँ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
और गर्भवती स्त्रियाँ
और दूध पीते बच्चे
हाड़ उभरी भैंसों की पीठ पर
और पेड़ों की टहनियों पर
पूरी ताकत से
छिपकली से चिपके
डूबते-उतराते
दहाड़ मारती जल-राशि के साथ
समुद्र की ओर जा रहे हैं।
हम उन्हें
अन्तिम सन्देश देंगे —
कि वे घबराएँ नहीं
कि वे निराश न हों
कि वे देश के लिए मर रहे हैं
कि उनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा
बाढ़ आयी है, जिस बांध के टूटने से —
हम कृत-संकल्प हैं वहीं।
दूसरा वांध बनाने के लिए
हम काम देंगे उस बांध पर दूसरे क्षेत्र के लोगों को,
वादा करते हैं हम
कि अगर इसी तरह
चले गए वे भी समुद्र की ओर
नया बांध टूट जाने पर
तो, हम नियुक्त करेंगे
तीसरे क्षेत्र के लोगों को
फिर नए बांध के शिलान्यास के साथ
उनका बलिदान भी व्यर्थ नहीं जाने देंगे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
देश के लिए मरेंगे वे भी
उनके लिए भी
अन्तिम संदेश की
तैयारी रखेंगे हम,
इसके बाद भी अगर
टूट गया बांध
नहीं हारेंगे हम फिर भी
एक नए बांध की आधार-शिला
रखेंगे फिर
और काम पर लगा देंगे इस बार
पूरा का पूरा देश
बलिदान होना है — तो,
पूरा देश ही हो जाए
पूरे देश के विकास के लिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

नया आल्हा

जंगल से लौटे
ढोर-डंगरों को
घेर में बन्द कर
औगल लगा दी
रंभाती गायों
और डौंकती भैंसों का
दूध निकाल कर
सानी-पानी कर दिया,
खाना खाकर
झाड़ू की सींक तोड़
दाँत कुरेदे
और आ जमे
घर-घर से निकल कर लोग
गाँव की इकलौती चौपाल पर।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
सेवक मस्तो लगे निकलन
घूम-घूम कर
चौपाल में सब जगह,
आस-पास दौड़ने लगी
बेचारी बीड़ी भी,
नक्कारी ने नक्कारे की ओर
चोर नज़र से देखा
नक्कारची समझ गया ... ...
मील भर दूर के गाँव वालों के कानों को
आल्हा ने चौकन्ना कर दिया
ओढ़ ली गन्दी सी चादर
ले लिए लठ हाथ में
चल दिए सब
उसी चौपाल की ओर।
चढ़ गया चाँद आकाश में
गरमाने लगा जोश चौपाल में
गरजने लगी वीरता
महोबे की

"—एक को मारें दो मर जावें
तीसरा दहशत से मर जाए
नीचे का दम नीचे रह गया
ऊपर ले गया राम उठाय
बड़े लड़ैया मौहबे वाले
जिनसे पार बसाई नाय
... ...
... ..."

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लाल होने लगे
लोगों के चेहरे
हाथ सहलाने लगे
लाठियों की स्याम
नारे लगने लगे
राजा के खिलाफ़
कूच हो गया राजधानी की ओर
चीखने लगी राजा
सैनिकों के कान में
किसी ने नहीं सुना
किसी ने कुछ नहीं किया
पागल होकर
रोने लगा राजा

थोड़ी देर बाद
राजा के शव पर
नाचने लगे लोग
सूरज की लाली
आने लगी पूरब से ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

भाषण देने वाले

भाषण देने वाले
कभी नहीं मरते
क्योंकि वे सिर्फ शब्द होते हैं,
इसलिए घूमते रहते हैं
घास की फुनगियों से
बादलों के कपड़ों तक,
घुसते रहते हैं
एक आदमी से लेकर
एक भीड़ के मस्तिष्क में,
आग होते रहते हैं
चिल्लाती और बौखलाती हुई आग,
दौड़ते रहते हैं
बस्तियों से बस्तियों तक,
पार होते रहते हैं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
बन्दूक की नली के,
पेट्रोल-बम की बोतल के,
तलवार और चाकू के,
बैठ जाते हैं
पानी की धार पर
मोड़ देते हैं उसकी दिशा
जलते घरों से तालाबों की ओर,
सिखाते रहते हैं
बच्चों को
दाँत और नाखून
तेज़ करने के तरीके
और एक दूसरे पर थूकने की
अधुनातन शैलियाँ,
कुछ काल बाद
मन्दिर और मस्जिद में
बदल जाते हैं भाषण देने वाले
और बच्चे
बदल जाते हैं राख में,
भाषण देने वाले, शब्द होकर
आरती से अजान
और अजान से दंगे में गूंजते रहते हैं
मगर बच्चे
एक बार राख होकर
कभी नहीं उठते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हिरोशिमा की औरत

मेरे हाथ में कलम है
और मैं
हिरोशिमा की उस औरत के
अनुभवों से गुजरना चाहता हूँ,
जो अपने पेट में
एक वैज्ञानिक
एक गणितज्ञ
और एक अन्तरिक्ष-यात्री
लेकर मर गयी,
चालीस साल से लगातार
कविता लिखने की कोशिश की है मैंने
उस औरत पर
पर हर बार
उसने मुझे मना किया है

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
कविता लिखने के लिए
क्योंकि कविता को वह
कविता बने रहने देना चाहती है
हादसा नहीं बनाना चाहती
आदमी के भीतर बैठे
आदमी की भयानक मौत का,
हर रोज
सपने में मना करती है वह औरत
मुझे कविता लिखने के लिए
कभी वह बदहवास दौड़ती हुई आती है
कभी पागलों की तरह रोती हुई आती है
कभी चीखती हुई आती है
कभी उसकी आँखें आग का गोला होती हैं
कभी उसकी मुट्ठियाँ तनी हुई होती हैं
कभी वह निढाल होती है,
कभी-कभी वह औरत
बे-साख्ता हँसती हुई भी आती है
अपने फूले हुए पेट पर
बढ़े हुए नाखून के सहारे
वैज्ञानिक, गणितज्ञ और
अन्तरिक्ष-यात्री का चेहरा बनाने की कोशिश करती हुई,
ज़ोर से हँसने के बाद
मर जाती है वह औरत
अपना पूरा हाथ हवा में लहराते हुए
कविता लिखने को
मना करती हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

इतिहास

कुछ साल पहले
सारे देश की
सड़कों के मुँह
सिल दिये गए थे,
दबा दिया गया था
चौराहों का गला,
रास्तों के दोनों ओर
खड़ी कर दी गयी थीं
खण्डहरों की पंक्तियाँ,
दूर-दूर तक
सन्नाटा
टहल सकता था
काला
और लाल चेहरा लिये,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
अन्धे कुओं की
तमाम कीचड़ निकाल कर
समाचार पत्रों के
मुँह में भर दी गयी थी,
सम्पादक
सिर्फ टेलीफोन सुन सकते थे
या कलम
उल्टी पकड़े
दिन भर
ठाड़ी खुजा सकते थे,
जवानी की नाभि पर
चला दिये गए थे
तीखे औजार,
चीखती-चिल्लाती
जिजीविषा को
काँटेदार तारों से घिरे
जंगल में कैद कर दिया गया था
शोर भी
बाहर नहीं आ सकता था किसी का,
जनता के सिर को
ढक दिया गया था
बड़े-बड़े शामियानों से
और
समझाया गया था
रेडियो, टेलीवीजन से
सारी जनता को

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कि 'सूरज
बहुत उद्दण्ड हो रहा है आजकल
इसलिए उसे
ऊपर ही रोक दिया गया है
वह बेरोक-टोक
धरती पर नहीं उतर सकेगा
और न जनता
अपनी मर्जी भर से
उसे पुकार कर
अपने पास बुला सकेगी,
बगावत कर सकती है
जनता
देश के खिलाफ,
इसीलिए
उस पर
लगाए गए हैं
कुछ प्रतिबन्ध,"
इससे भी आगे
की गयी थी घोषणा
कि "यदि किसी ने
नजर बचा कर
सूरज को झाँका
तो उसे
धकेल दिया जाएगा
घुट्ट अंधेरे कमरे में,
पहले से ही

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
वहाँ
बहुतों को पहुँचाया जा चुका है
वहाँ पहुँचने वाले
सूरज की रोशनी की मांग के साथ
अंधेरे की क्रूरता के खिलाफ भी
जुबान नहीं खोल सकते
जो ऐसा करते हैं
उनके सिर पर
हजार-हजार वाट के
बल्ब जला दिये जाते हैं,
या उनके दिमाग को
बिजली के झटकों से
दुरुस्त किया जाता है,"
बड़े-बड़े पोस्टर
चिपकाए गए थे
दीवारों पर
यह प्रचारित करते हुए
कि इस देश में
फसल उगाई जानी है
अहिंसा
परिश्रम
और अनुशासन की,
इसी कारण
खींचने पड़े हैं
लोगों के नाखून
और कुर्सियों के पायों के नीचे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
जोर से दबा कर
सख्त बनानी पड़ी है अँगुलियाँ
मजबूरन"
इतने पर भी
आदमी के मुँह से
वे डरते रहे
कि बंधा हुआ आदमी
दाँतों से काट न खाए
या फिर
हिंस्र भाषा न बोलने लगे,
इसीलिए उन्होंने
आदमी के मुँह पर
चिपका दिया
कानून का मजबूत टेप,
नुक्कड़ की सभा में
रोज जो भाषण दिये जाते थे
उनका निष्कर्ष था —
कि लोकतन्त्र में
उनका पूर्ण विश्वास है,
इसीलिए उन्होंने
अभी तक
जनता का घर नहीं बेचा है
उसे केवल
सील करके छोड़ दिया है,
जनता को
उनकी सेवा की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
सख्त जरूरत है
इसीलिए उन्होंने
न्यायालय के फैसलों को भी
कान देने योग्य नहीं समझा है
बड़ी आखिर
जनता की अदालत है न।
टुकड़-खोर
न्यायाधीश तो बड़ा नहीं है
संविधान भी
बड़ा नहीं है जनता से
इसीलिए उसे
कांग्रेस-कार्य-समिति के
आफिस में
चपरासी की नौकरी दे दी है
इससे मौजूं
और स्थायी चरित्र वाली नौकरी
दूसरी कहाँ है
इस देश में अभी ?
इस भाषण का
जोरदार स्वागत होता था,
तालियाँ बजती थीं
एक पूरी नपुंसक बिरादरी
भाषण कर्ताओं के लिए
कसीदे पढ़ती थी
और पुस्तकें लिख कर
उनके भाषण की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran
जनपक्षीय व्याख्या करती थी,
नासमझों का
एक दल ऐसा भी था
जो भाषण का
सही अर्थ नहीं समझता था
'उनकी' नजर में
वह
लोकतन्त्र का अर्थ भी नहीं समझता था,
यही दल
जनता के निकट था
क्योंकि जनता भी तो
लोकतन्त्र का अर्थ नहीं जानती थी,
बहुत दिनों तक
काँटेदार खेल चलता रहा
मगर एक दिन
लोकतन्त्र के सन्दर्भ में
नासमझ दल ने
जनता के साथ मिल कर
शामियाने में आग लगा दी
सुरमई धुँआ छँटते ही
सूरज फिर चमकने लगा।
इतने वर्षों बाद
फिर वही खेल
शुरु हो गया है इस देश में
नया शामियाना
बनवाया जा चुका है

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

उसके चारों ओर के छेदों में
बाँस सटा दिये गए हैं
पता नहीं
उसे किस रात खड़ा कर दिया जाए
और सुबह
सूरज गायब मिले,
बुद्धिजीवी
चुप रहने की
परम्परा निभा रहे हैं
क्या एक बार फिर
इस देश का इतिहास
दीमक की भाषा में लिखा जाएगा?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

मेरे बच्चे के साथ

तुम गाँव में
अपनी उम्र के बूढ़ों के साथ
फागुन गा रहे हो मेरे पिता
और यहाँ शहर में
मेरा बेटा
अपनी लकड़ी की बन्दूक से
सूरज के टुकड़े कर रहा है
उसकी गोरी बाँहों वाली टीचर ने
उसे क्लास में बताया है
कि बच्चा बड़ा होकर
सारी दुनिया जीत सकता है,
यहाँ तक
कि चांद, सूरज और तारों को भी
अपने आदेश पर चला सकता है,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बड़े-बड़े युद्ध लड़ सकता है बच्चा
किसी के भी खिलाफ
थोड़ा हौसला चाहिए उसे।
तुम तो
जर्मनी में लड़ चुके हो मेरे पिता
तुम्हीं बताओ
क्या मेरे बच्चे की टीचर ने
उसे सही सीख दी है ?
युद्ध में क्यों झोंकना चाहती है वह
मेरे बच्चे को
जब कि मैं
इसका कोई कारण नहीं देखता
क्या वह
अपने गर्भ से पैदा किए बच्चे को भी
बिल्कुल यही सीख दे सकती है ?
उसके हाथ में
बन्दूक थमा सकती है ?
उसे जीते जी धुँआ बना सकती है ?
जन्म के समय ही
उसके माथे पर
बम बांध सकती है ?
कभी नहीं करेगी
गोरी बाँहों वाली टीचर
अपने बच्चे के साथ ऐसा
फिर मेरे पिता !
मेरे बच्चे के साथ ही
ऐसा क्यों हो रहा है ???

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

शीर्षक

मुझे नहीं मिला शीर्षक
और तुम्हें
तुम्हारे उलझे सवाल का उत्तर
मेरी अंगुलियों पर
मौजूद है
कविता की क्रूर खोज
तुम्हारे सवाल की जीभ पर
खोज को क्रूर कविता
दोनों ही
परम्परा को
जबर्दस्ती नहीं निगल सकते,
खाकी वर्दी वाला सिपाही
उस आदमी से
बिल्कुल भिन्न होता है
जो —

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh: Funding by IKS-MoE-2025-Grant
सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान पर
हाथ में थामें
खाली कनस्तर को
भरत नाट्यम के संगीत की उठा-पटक पर
बजाने लगता है
अपनी बारी न आने की
आकुलता को
हवा में उड़ाने के लिए
उस समय वह
अपने भीतरी शरीर को
चिथड़े-चिथड़े
धूल में बिखेर कर
देश के कानून को
अनेक शीर्षकों में बांधने लगता है
वर्दी तब भी
खाकी ही रहती है
किन्तु वहाँ
मेरा अपना शीर्षक
और तुम्हारा सवाल
एक दूसरे का गला काटने लग जाते हैं ;
नये मकान की
छत पर जाने के लिये
अपनी समूची वंशावली के साथ
सीढ़ियाँ बनाने में
जुट गए हैं कुछ लोग
चालीस की संख्या गिनी गयी थी
पिछली बरसात में

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

कारीगरों ने
अपनी प्रशंसा में
खुद ही
लम्बे-लम्बे भाषण पढ़ना
अच्छा समझा था
कि कहीं कोई दूसरा
किसी षड्यन्त्र के तहत
अशुद्ध उच्चारण न कर दे
य मंच के
बिल्कुल करीब की
सीढ़ी के भीतर का रेत
भवन के ठेकेदार की
कलई न खोल दे
सत्तरसाला एक बूढ़ा
बहुत रोया यह देखकर
कि जैसे सीढ़ियों में
उसकी पीढ़ियाँ चिनी गई हों
और उन्हें
एक शब्द भी न मिला हो,
दुःख
तुम्हें भी हुआ
और मुझे भी
क्योंकि एक बार फिर
मेरा शीर्षक
और तुम्हारा सवाल
बूढ़े के रुदन में
रास्ता भटक गये थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पुनर्विचार

जब जीभ से चाटने लगे
प्रधानमन्त्री संविधान को
और सींगों पर उठा कर कुर्सी
भागने लगे सीमाओं की ओर
तब जनता को
अपने वोट डालने के अधिकार पर
फिर से विचार करना चाहिए
... ...
... ... ।
जब बहरा हो जाए प्रधानमन्त्री
पूरी तरह —
न्यायाधीश अपने निर्णय की घोषणा करते रहें
और वह
अपनी रखैलों को

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

अलीबाबा और चालीस चोरों की
कहानी सुनाता रहे
तब जनता को
अपने वोट डालने के अधिकार पर
फिर से विचार करना चाहिए
... ...
... ... ।

जब आँखों की दृष्टि चली जाए प्रधानमन्त्री की
देश के हर चौराहे पर
हत्याओं और आत्म-हत्याओं का
उत्सव सा मनाया जाने लगे
और वह
अख़बार तक न पढ़ सके किसी सुबह
तब जनता को
अपने वोट डालने के अधिकार पर
फिर से विचार करना चाहिए
... ...
... ... ।

जब काटने लगे प्रधानमन्त्री
जनता की जीभ,
शामिल करलें सहयोगी मन्त्री
भाषण में गालियाँ
और कसने लगें नाखून
लोकतन्त्र के टेंटुए पर
तब जनता को
अपने वोट डालने के अधिकार पर
फिर से विचार करना चाहिए
... ...
... ... ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

किताबों के चेहरे

एक दिन
कुछ लोग
मुझे ज़बर्दस्ती खींच ले जाते हैं
एक तहखाने में
और बांध देते हैं मेरी गर्दन के चारों ओर
किताबें
हरी, सफेद, नीली, पीली, केसरिया
... ...
छोड़ आते हैं मुझे अकेला
उन किताबों के बीच
अचानक उठने लगता है धुआँ
हरी किताब से
किताब ग़ायब हो जाती है
और उसकी जगह

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

बकरे की दाढ़ी वाला चेहरा
लटक जाता है
मैं चीख़ता हूँ
उसके दाँतों के बीच दबा छुरा देख कर
उसकी आँखें आग हो जाती हैं
वह अपनी जीभ से
ओठ चाटने लगता है
उसकी लार
मेरी छाती पर बहने लगती है
अब मैं चीख भी नहीं सकता,
थोड़ी देर बाद
सफेद किताब भी
बन जाती है चेहरा
लम्बे बालों से ढका
दाँतों में बन्दूक दबाए
इसके बाद नीली, पीली, केसरिया
सबमें उठता है धुआँ
सब बदल जाती हैं चेहरों में
दाँतों में दबाए
धनुष, पेट्रोल, टैंक, तोप, तलवार
लटक जाते हैं सब चेहरे
मेरी गर्दन के चारों ओर
चाटने लगते हैं सब
अपनी-अपनी जीभ से
अपने ओंठ
बहने लगती है सबकी लार
मुझे देख कर।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

संविधान

कब तक डरते हुए
रेत के टीले पर
नाख़ून से
निशान बनाते रहेंगे हम
आज नहीं तो कल
हमें चीख़ना ही पड़ेगा
उसके ख़िलाफ़
और तैयार हो जाना पड़ेगा
हवा में लहराते हाथ को
चाकू बनाने के लिए।
लगातार चुप्पी के ताबूत में सोए
कायर होते रहे हैं हम
और इस अवधि में उसने
अपने ही घर में

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
देश के संविधान को
कलैण्डर की तरह टाँग दिया
उसके गले के ठीक बीचों-बीच
नीली कीलें ठोक कर,
और इससे पहले
कि संविधान के शब्द
तड़प कर
हवा में गर्मी भरने की कोशिश करें
वह
दरवाजा बन्द कर
ताले की जगह
खुद झूल गया
पूरा का पूरा,
एक तख्ती भी
लटका ली उसने गले में
जिस पर लिख डाला
"संविधान की सुरक्षा की समस्या है
आप लोग अन्दर न जाएँ
इस बन्द जगह पर
हमारे सैनिक
संविधान से निपट रहे हैं
क्योंकि वह
पिछले कुछ दिनों से
जनता के पक्ष से होते हुए
अपने ही ख़िलाफ़ चला गया है,
आप लोग बाहर रह कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
आवाजें सुनें
आने वाले चुनाव तक,
निर्वाचित होते ही
उसे छोड़ देंगे फिर से हमारे सैनिक
आप लोगों के घरों की ओर
जाने वाले रास्ते पर;
कृपया शान्ति बनाए रखें
अहिंसा का त्याग न करें
अपने हित के लिए अन्दर न जाएँ।"
हम —
जो, दरवाज़ा तोड़ कर
अन्दर जा सकते थे
इस तख्ती को
पढ़ते हुए खड़े हैं
और इस पर लिखी इबारत के
अलग-अलग अर्थों पर
खाली बहस कर रहे हैं
हमारे पक्ष में खड़ा होने वाला संविधान
सैनिकों से जूझते हुए
धीरे-धीरे दम तोड़ रहा है।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

धमनियों का लहू

अगर
धमनियों का लहू
पानी में तब्दील नहीं हो गया है
तो क्यों देख रहा हूँ
का-पुरुषों की तरह
सूरज को जहर पीते हुए,
अगर कान
शीशे के
बन्द मकान नहीं बन गए हैं
तो क्यों नहीं सुन रहे हैं
लगातार कब्रिस्तान की ओर बढ़ती हुई
आँतों के
बजबजाने की आवाज

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अगर आँखें
पत्थर की
बे-जान मछलियाँ नहीं रह गयी हैं
तो क्यों नहीं देख रही हैं
टूटी हुई चप्पल
तला घिसा हुआ जूता
टूटा हुआ घुटना
जगह-ज़गह फटा हुआ नंगा पैर
गरम सलाखों से
दागा ज़ाता हुआ घर का नौकर
और पिटता हुआ मजदूर,
अगर मुँह
टेप-रेकार्डर में
नहीं ढल गया है
तो क्यों गा रहा है
आज भी
समाजवाद
लोकतन्त्र
धर्म - निरपेक्षता
और झण्डे की
अमरता के गीत
जबकि अब
इस देश में
इनमें से कोई भी शेष नहीं है
क्योंकि
समाजवाद—

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
माँ के पेट में ही बूढ़ा हो गया है
लोकतन्त्र —
किसी मरे हुए बच्चे सा
पैदा हुआ था
जिसे तभी दफ़ना दिया गया
धर्म-निरपेक्षता
सन् सैंतालीस से ही
बलात्कारियों के पंजों में है
और झण्डा
गांधी के साथ
राजघाट पर सो रहा है,
अगर हाथ
पागल छुरे नहीं बन गए हैं
तो क्यों चीर रहे हैं
उन महिलाओं को
जिनके गर्भ में
भविष्य पल रहा है
क्यों उतर रहे हैं
उन सपनों के भीतर
पेट के रास्ते
जो इसी देश की
भूरी जमीन में उगे हैं
अगर पैर
बैसाखी के
सूखे डण्डे नहीं रह गए हैं
तो क्यों बढ़े चले जा रहे हैं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

खट्-खट्-खट्-खट्
धुएँ की बस्तियों की ओर
क्यों नहीं महसूस रहे हैं
बर्फ की जलन
जो सामने की सड़क पर
खुली हुई लेटी है,
नहीं हैं मेरे पास
लहू
कान
आँखें
मुँह
हाथ
और पैर
क्योंकि मेरा लहू
हो गया है पानी
मेरे कान —
बन गए हैं शीशे के बन्द मकान
मेरी आँखें —
रह गयी हैं पत्थर की बे-जान मछलियाँ
मेरा मुँह —
ढल गया है टेप-रेकार्डर में
मेरे हाथ —
हो गए हैं पागल छुरे
और मेरे पैर —
बैसाखी के सूखे डण्डे।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

एक पुरानी कहानी

वह कहानी
कभी नहीं भूलती मुझे
जिसकी नायक थी एक लोमड़ी।
खरगोश को
धकेल दिया गया था
पुल पर
उसके कमज़ोर कन्धों पर
कीलों के सहयोग से
स्थापित कर दिया गया था
जंगल की स्वतन्त्रता की घोषणा करने वाला
सुविचारित विधान,
काट दी गई थी सड़क
दोनों सिरों पर
और नदी में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
ला दी गई थी बाढ़,
पानी
ख़तरे के निशान से
ऊपर बढ़ रहा था लगातार
खरगोश
चीख-चीख कर
बुलाता रहा था दिशाओं को
सहायता के लिए
मगर गुफाओं से
कोई नहीं आया बाहर
(क्योंकि
पेड़ की फुनगी पर
बंधी घंटी
बजी ही नहीं)
पानी
पुल के ऊपर आ गया,
खरगोश
इस किनारे से उस किनारे तक
दौड़-दौड़ कर
ऊँची जगह खोजता रहा
मगर पुल का पूरा शरीर
समतल था,
खरगोश
इधर-उधर देखने लगा
लेकिन दूर-दूर तक
कुछ नहीं था

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
पानी के शोर
हिंसक विस्तार
और
शून्य की गहराई के सिवा,
पानी और ऊपर बढ़ा
खरगोश के
घुटने भीगने लगे
फिर
उसकी नाभि का गड्ढा
पानी से भर गया
और कुछ देर बाद
पानी का रेला
खरगोश की छाती पर सवार हो गया,
खरगोश ने
फैली-फटी आँखों से
अपने कन्धों की ओर देखा
सुविचारित विधान
अभी भी
वहीं गड़ा था
खरगोश का दिल बैठ गया
"अगर
विधान डूब गया
तो फिर
लोमड़ी
अपनी रसोई में उबला विधान
सूरज के गले में टांग कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
जंगल को आग के हवाले कर देगी
और मुक्ति की
आदिम चेतना ही मर जाएगी
जंगल
एक बार फिर
सदियों तक
स्वतन्त्र नहीं रहेगा"
अब तक पानी
कीलों को पकड़ कर
खरगोश के कन्धों पर खुदे
घावों को चाटने लगा था,
एकाएक
खरगोश ने
चमकती आँखों से
बस
एक बार
विधान की ओर देखा
और अनुमान से
पास वाले किनारे की
दिशा की ओर मुँह करके
प्रलय-बाढ़ में कूद गया
"शायद
सुविचारित विधान की
पहचान ही बच जाए
इस तरह"
इतने बरसों बाद भी

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
मेरे भीतर
यह अहसास जिन्दा है
कि
कहानी का खरगोश
आज भी
मेरे चारों ओर के
अंधेरे जंगल की बाढ़ में
हाथ पैर मार रहा है
कन्धों को
पानी से ऊपर रखने के लिए,
मगर लौमड़ी भी
कम चालाक नहीं है
उसने
नदियों के किनारे
तोड़ दिए हैं
और बाढ़ का
और भी विस्तार कर दिया है,
अब
जंगल में
बाढ़ वाली नदी है
नदी में
बाढ़ वाला जंगल है
मचान पर लौमड़ी है
पेड़ पर
अनबजा घण्टा है
जल के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दुधर्ष प्रवाह में
खरगोश है
उसके घायल कन्धे हैं
डूबने के भय से
पीले चेहरे वाला विधान है
आकाश में हवा है
और सब ओर
खामोशी है।
कहानी चल रही है
पुराने जमाने से आज तक
लौमड़ी और खरगोश की
बिना बदलाव के उसी तरह
क्या मेरा
पानी में
छलांग लगा कर
खरगोश के पास
पहुँचना
आवश्यक नहीं ?

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

दंगा करता देश

देश
हिंसा भड़का रहा है
देश के भीतर,
प्रधान-मन्त्री ने आदेश दिया है
कानून की जीभ काट कर
नाम कमाने वाली पुलिस को
कि दंगा करते हुए देश को
देखते ही गोली मार दी जाए,
पुलिस का अमला
खोज रहा है दिन-रात उसे
प्रधान-मन्त्री के निर्देशन में,
प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री और पुलिस
जिप्सियों में भरे हुए
घूम रहे हैं –
रांची, जयपुर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दिल्ली, जोधपुर
मेरठ, कानपुर
कोटा, धामपुर
पुर, पुर, पुर, पुर।
पुर, पुर, पुर, पुर।।
अयोध्या, फैजाबाद
सम्भल, मुरादाबाद
बिजनौर, हैदराबाद
आगरा, फरीदाबाद
बाद, बाद, बाद, बाद।
बाद, बाद, बाद, बाद।।
कहीं नहीं मिल रहा है देश
कोई नहीं खोज पा रहा है देश को
क्योंकि, देश बैठा रो रहा है
इतवारी हरिजन के पेट में
सालों से भूखा
सालों से प्यासा
सालों से नंगा
सालों से बीमार
नहीं जानता प्रधानमन्त्री
नहीं जानता मुख्यमन्त्री
नहीं जानती पुलिस
नहीं जानते तीनों
कि कहाँ छिपा है देश... ... ...
पर जानते हैं तीनों
कि यह जो दंगा
हो रहा है देश में
उसे भड़का रहा है देश ही।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

कुर्सी-दौड़

सच के लिए
सारे रास्ते
बन्द हो जाते हैं
जिस मोड़ पर —
वहीं से शुरू होती है
कुर्सियों की सड़क,
कुर्सियाँ ही कुर्सियाँ
कुशन
और चमकदार रोगन से
लकदक ।
कुर्सियों की इस सड़क पर
रात-दिन दौड़ते हैं
सिर कटे लोग।
रीढ़ की हड्डी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जूतों में छिपाए
कभी भिखारी के वेश में
कभी महाजन के कपड़ों में
और कभी क्रान्तिकारी के अन्दाज़ में
दरसल
पैर नहीं होते इन लोगों के पास
इनके पास
सिर्फ़ जेबें होती हैं
उन्हीं में ये रहते हैं
उन्हीं में खाते-पीते हैं
उन्हीं में सोते-जागते-सोचते हैं
उन्हीं में हगते-मूतते भी हैं
अन्त में उन्हीं में मर जाते हैं ये लोग,
तब फिर
कुर्सियों की सड़क पर
दौड़ने के लिए
गर्भाशय से सीधे बाहर निकल आते हैं
इनके बच्चे
बिना सिर-बिना पैर-बिना रीढ़ के,
एक दूसरे को
कुहनियों से धकियाते हैं वे
कब्जा जमाने
और झण्डा गाड़ने के लिए
सबसे खूबसूरत कुर्सी पर।
तमाशा देखने के लिए —
इस कुर्सी-दौड़ का

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
दल के दल बना कर
आते हैं — पत्रकार
कलाकार
लेखक
बुद्धिजीवी
चुपचाप देखते हैं सब
इस तमाशे को
सड़क के दोनों ओर खड़े होकर;
मगर चुप अगर नहीं रहा जाता
तो फटा जूता सिल कर
दिमाग में रोटी का चित्र उकेरते
एक बूढ़े से नहीं रहा जाता
क्योंकि इस पूरे तमाशे में
लोगों के पैरों की ठोकरों से
बिखर कर दूर-दूर फैल जाता है
उसका सामान
बिदक कर गालियाँ देते हुए
बिना पैसा चुकाए
चलते बनते हैं उसके ग्राहक
और बिगड़ जाता है
उसके दिमाग में बनी रोटी का नक्शा॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बकरी

गड़रिया आया
बकरी को
मैदान में गड़े
खूँटे से बांध दिया
बकरी
गोलाकार घूमती रही
सूरज
पूर्व से पश्चिम में आ गया
गड़रिये ने
बकरी को जी भर दुहा
और उसे
वहीं बंधा छोड़
घर चला गया।
रात में
शेर बकरी को खा जाएगा।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

देश

गाँव भर की नाभियों में
उग आयीं चिमनियाँ
शहर भर के पेट
हो उठे भट्ठियाँ
चिमनियों से उठ रहा
विन व्याही लड़कियों के
स्तनों का धुआँ
भट्ठियों में दहक रहा
छुट्टन मज़दूर,
सौ साला बूढ़े सा
टुकुरऽऽ टुकुरऽऽ देखता
बेबस है देश !!!!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अक्कड़-बक्कड़

देश चलाने-वाले
सब्जी बेच रहे हैं
सब्जी बेचने वाले
इलेक्शन लड़ रहे हैं
इलेक्शन लड़नेवाले
सड़क पर पानी छिड़क रहे हैं
पानी छिड़कने वाले
प्रधानमन्त्री का भाषण लिख रहे हैं
भाषण लिखने वाले
जुआ खेल रहे हैं
जुआ खेलने वाले
विदेशी समझौते कर रहे हैं
समझौते करनेवाले
कुर्सी साफ कर रहे हैं

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

कुर्सी साफ करनेवाले
मन्त्री हो गए हैं
मन्त्री जी
सब्जी खरीदने जा रहे हैं,
"अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बौं
अस्सी-नव्बे पूरे सौ
सौ में लगा तागा
चोर निकल के भागा"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मज़दूर

तुम्हारी आँखों ने पिये हैं
पूरी एक उम्र के आँसू
लोहा गलाने वाली
भट्ठी के सामने,
पसीना भी
कहाँ टपक सका है
ज़मीन पर किसी वक्त
सदा ही
सिर से चल कर
पेट पर आते ही
सूख गया है
लोहे की
आग से भी
अधिक गरम

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

भूख की आँच से,
साँस से तुम
उगलते रहे हो
वह कीचड़
जो तुम्हारे सबसे छोटे बच्चे ने
अपने रक्त से तैयार की थी,
किसी ईंट पर
कभी
तुम्हारा नाम नहीं लिखा गया
न तुम्हें नसीब हुआ
कभी पक्का घर
तुम
कभी पत्नी को
दूसरा लहंगा नहीं दिला पाए
और बच्चों को
मौसम के आम
या मकई का भुट्ठा
या टाफी
हर दोपहर तो
प्याज और लूनी रोटी भी नहीं
किस मिट्टी के बने हो तुम
तुम्हारी पत्नी
तुम्हारे बच्चे
किस हवा को
पीते हो तुम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

प्यार की कविताएँ

घड़ी की सुई
सीढ़ियाँ उतर रही है
हरे पानी से भरे कुएँ की
गिन–गिन कर
टक्-टक्-ट्क
और कुआँ
मेरे भीतर
बैठता जा रहा है
बिना किसी सिलसिले के,
पूरे शहर का चेहरा
भदेस हो गया है
शोर और भीड़ के कारण,
पैट्रोल के धुएँ से
लगातार लड़ते हुए

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
दिन की अँगुलियाँ
नाखूनों से अलग हो गई हैं,
नालियों में बह रहा है
गन्दे रक्त
और नरमांस के टुकड़ों से बना
दुर्गन्धित कीचड़,
नथुनों को
घोर व्यायाम करना पड़ रहा है
जीने के लिए,
ऐसे में तुमसे
प्यार की बात कहाँ पर हो ?
कहो … … … … ?
कहाँ … … … … … ?
कैसे … … … … … … ?
मिलें हम अपने समय का चेहरा
खोजते हुए
किस मोड़ पर टकराएँ
पूरे शहर की विद्रूप हवा से।
और जब सड़कों पर
आदमी के रूप में धुआँ टहल रहा हो
तो हम
घर में बन्द रह कर
किताबों के पन्ने पलटते हुए
प्यार की कविताएँ भी
किस अधिकार से पढ़ें ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

माँ का बयान

बच्चा बार-बार
माँ से
अपने बाप का नाम पूछता हैं
माँ पहले ज़ोर से हँसती है
फिर उससे भी ज़ोर से
रोने लगती है
फिर बड़बड़ाने लगती है
... ...
बच्चा किशोर हो जाता है
अपने बाप का नाम बताने पर
ज़ोर देता है
माँ फिर बड़बड़ाकर रह जाती है
किशोर समझता है
उसकी माँ से कभी

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
भयानक भूल हो गयी है
उसे घृणा होती है
अपनी माँ पर
वह स्वयं घृणा की भट्ठी में
लावे सा पिघलने लगता है
माँ तब भी
बच्चे को प्यार करती है।
... ...
कुछ दिनों बाद
माँ मर जाती है
उसके सन्दूक से
एक पुरजा मिलता है
जिस पर लिखा है —
"मेरे बेटे !
मैं वेश्या या बदचलन नहीं थी
जैसा कि तुम समझते रहे लगातार,
तुम्हारे तमाम उम्र पूछने पर भी
नहीं बताया मैंने
तुम्हें, तुम्हारे बाप का नाम
यह मेरी मजबूरी थी
जिसे तुमने कभी नहीं समझा,
अब इस अन्त समय
मेरा एक मन कहता है
कि बता ही देना चाहिए तुम्हें
तुम्हारे बाप का नाम
मगर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
मेरा दूसरा मन
नाम न बताने का अपराध-बोध लिए ही
दुनिया से चले जाने को
बाध्य करता है
... ...
मैं माँ हूँ तुम्हारी मेरे बेटे!
और साथ-साथ
पत्नी भी हूँ तुम्हारे बाप की
तुम्हें
नाम तो नहीं बताऊँगी
तुम्हारे बाप का
सिर्फ पहचान बताऊँगी ... ...
तुम्हें मेरे गर्भ में रोप कर
वह चला गया था एक दिन
उन्माद का रूमाल गले में बांध
एक जुलूस में
तब से नहीं लौटा घर
घूम रहा है भीड़ के साथ
शहर की उन गलियों में
जहाँ दूसरे धर्म वाले रहते हैं,
वह जला रहा है
दूसरे धर्म वालों के घर,
उनकी दुकानें,
बूढ़ी महिलाएँ और बच्चे,
पकड़ रहा है
उनकी जवान लड़कियाँ

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
ले जा रहा है
किसी अज्ञात तहखाने में,
कभी वह भीड़ के सिर पर होता है
कभी पेट पर
कभी पैरों पर
अर्थात् वह सब जगह रहता है
किसी अज्ञात शक्ति के
आदेश का पालन करने में व्यस्त,
वही बाप है तुम्हारा,
कभी नहीं बताऊँगी तुम्हें उसका नाम,
मैं डरती हूँ
कहीं नाम जान कर तुम भी
उसी जलूस में शामिल न हो जाओ
तुम चाहो—
तो मुझे वेश्या समझते रहो
... ... !!"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हवालात और आकाश

क्या लिखा है तुमने
अपने घर की दीवार पर
जिसे पढ़ते ही
आकाश से खून बरसने लगता है
... ...

क्या लिखा है तुमने
अपनी भूरी पुतलियों पर
जिसे पढ़ते ही
आकाश के टुकड़े हो जाते हैं
... ...

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
क्या लिखा है तुमने
अपने बच्चे के मस्तक पर
जिसे पढ़ते ही
आकाश से रासायनिक हथियार गिरने लगते हैं
... ...

क्या लिखा है तुमने
प्रार्थना के चबूतरे पर
जिसे पढ़ते ही
आकाश चीखने लगता है
... ...

क्या लिखा है तुमने
आदमी के ओठों पर
जिसे पढ़ते ही
आकाश रोने लगता है
... ...

क्या लिखा है तुमने
समय के कन्धों पर
जिसे पढ़ते ही
आकाश मर जाता है
... ...
? ? ? ? ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

उत्सव

मेरे पिता ने "उसे" बुलाया
मेरी माँ ने मेरा मुँह खोला
मेरी दादी ने ढोलक बजायी
मेरा बड़ा भाई द्वार पर खड़ा रहा
"वह" धीरे-धीरे
सधे कदमों से विस्तर के पास आया
"उसने" आँखें बन्द करके
मेरे बिना दाँतों वाले मुख में
शहद में कुछ अक्षर डुबा कर
धीरे से रख दिए।
मेरे जवान होते ही
शहद में डूबे हुए अक्षर
मेरे हाथों में
तलवार की तरह उग आए

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

अब मैं सारा दिन
अपने दोस्तों की
गर्दन की तरफ देखता हूँ
मेरी दादी
स्वर्ग में खुश है
और "वह"
अभी तक उत्सव में लगा है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

वह

जब वह जल रहा था
उसके मस्तिष्क में
चक्कर लगा रहा था देश
जिसमें उसके लिए
जीते जी कोई स्थान खाली नहीं था।
आफिसों की काहिल भीड़ के बीच
नाच रही थी रिश्वत
नियुक्ति-पत्रों पर
आधी रात को टाइप हो रहे थे
जाति-वाचक
सम्बन्ध-वाचक
क्षेत्र-वाचक
और दल-वाचक नाम,
बहुत दौड़ा वह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
पोस्टरनुमा प्रमाण-पत्र लिए
वेश्याधर्मी फाइलों के पीछे
दिमाग़ी रुप से
सूखा तालाब होने की हद तक
फिर भी टाइप मशीन ने
नियुक्ति-पत्र पर
नहीं उतारा उसका नाम,
चुपचाप हिसाब लगाने लगा वह
माँ की गालियाँ
और बाप की डाँट सुनते हुए
बहुत क्रोध आने लगा उसे
अपने देश पर
इतना अधिक
कि एक दिन वह
जल गया सबकी नजरें बचा कर
मस्तिष्क में लिए
यह नंगा देश।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

आँखें

वे आँखें
केवल तुम्हारी ही नहीं
मेरी भी हैं
जिनमें
भरा हुआ है
गोमती की बाढ़ का गदला पानी
गुजर रही हैं
पानी को काटती हुई
साइकिलें, स्कूटर
और बसें
पुतलियों के लाल डोरे
थरथरा रहे हैं
मृत्युभय से
आकांक्षाएँ

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
सफेद कोरों में
अपने को बचाने का
बचकाना प्रयास कर रही हैं
जबकि पानी
अपनी समस्त कड़वाहट से
उनकी जड़ों को
काट रहा है,
बरसों पहले की बरसात का
कूड़ेदान हो गयी हैं
आँखें
मेरी भी
तुम्हारी भी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

तिरंगा : बिल्ली : औरत

तिरंगे में लहराता हुआ
मेरा देश
शाहजहाँ के लाल किले की प्राचीर से
भाषण दे रहा है
लगातार चवालीस साल से
और मैं भी
चिन्गारीदार आँखों वाली
बिल्ली के दाँतों के बीच दबे
विवश कबूतर सा
भाषण सुन रहा हूँ
लगातार चवालीस साल से ही —
"बहुत महान है मेरा देश"
x x x x x

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
"बहुत वीर है मेरा देश"
x x x x
"बड़े इतिहास वाला है मेरा देश"
x x x x x x
"आदर्श संस्कृति वाला है मेरा देश"
x x x x x x
"विकास करना है हमें इस देश का"
x x x x x x
"देश की गाड़ी को सहारा देगी जनता"
x x x x x x
"जनता पर हमें पूरा भरोसा है"
x x x x x x
ये नारे —
चवालीस सालों पर लगे शामियाने हैं
पन्द्रह अगस्त से चौदह अगस्त तक
जीर्ण हो जाता है एक शामियाना
पन्द्रह की सुबह
दूसरा खड़ा कर दिया जाता है
मैं चुपचाप
इस गोल-गोल चकत्तों वाले
शामियाने के नीचे
बैठ जाता हूँ
और नारों को
मफलर की तरह कस कर
कानों पर बांध लेता हूँ
मगर आवाज़ें आनी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बन्द नहीं होतीं
एक औरत चीख़ती है
पंजाब के खेतों में
जहाँ उसके सामने
पति के सौ हिस्से कर दिए गए हैं
एक औरत चीख़ती है
काश्मीर में
जहाँ उसका बेटा
पाकिस्तान की गोलियों के डर से
अपने देश का संविधान न जलाने पर
आग में झोंक दिया गया है
एक औरत चीख़ती है
तेलंगाना के गाँवों में
जहाँ उसकी माँ
पुलिस दारोगा के
बलात्कार का शिकार हो गयी है
एक औरत चीख़ती है
पूर्वोत्तर के पहाड़ों के जंगल में
जहाँ उसके चारों ओर
भेड़ियों और कुत्तों की दीवार
लगातार कसती जा रही है
ये सारी औरतें
चीख़ते-चीख़ते
आवाज़ों के लावे में ढलती जा रही हैं
और लावा
नारों के मफलर की राख़ बनाता हुआ

कानों में प्रवेश कर रहा है,
C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
मेरे अन्दर धीरे-धीरे
एक लम्बे नाखूनों वाला बच्चा
आकार लेने लगा है
जो चिन्गारीदार आँखों वाली
बिल्ली के दाँत
तोड़ डालने की
तैयारी करता दिखता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लोग

कल
जुलूस में शामिल थे कुछ लोग
आज
सौदे में व्यस्त हैं वही लोग
कल
उद्घाटन में उपस्थित होंगे वही लोग।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

रेखा-चित्र

तारकोल की सड़क
मेरे भारी पंजों के
निशानों की गवाह नहीं बन सकती
समुद्र के गर्भ से उठी
चक्करदार लहरें भी
उन निशानों के
रेखा-चित्रों को
नहीं संजो सकतीं,
मगर मुझे कहाँ लिखना है इतिहास
पंजों के निशानों का
मुझे तो वे पंजे
संसद की दीवारों पर छापने हैं
ताकि सनद रहे
कि आई थी कभी जनता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दिल्ली भी
अपनी आवाज़ सुनाने
भले ही उसे
बेवकूफ़ बना कर
गाँव वापस भेज दिया गया था
किन्तु जनता
फिर भी आ सकती है
किसी भी दिन
किसी भी रात
किसी भी समय
और यह याद रखना
निहायत ज़रूरी है
कि हर बार उसे
धोखा नहीं दिया जा सकता।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

राजा

बात किसी भी ज़माने की हो सकती है —
कि जंगल में
एक राजा था
और उसके सामने
एक भीड़ थी।
राजा था नंगा ना-मरजाद
और भीड़ थी
कि उससे
तन ढकने को कपड़े मांग रही थी।
राजा था निपट अंधा
और भीड़ थी
कि उससे
उफनती नदी के पार जाने का
मार्ग पूछ रही थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
राजा था जनम-जनम का भूखा
और भीड़ थी
कि उससे
रोटियाँ मांग रही थी।
राजा था आदि-काल से गूँगा
और भीड़ थी
कि उससे
अपने पुरखों की भाषा मांग रही थी।
जब नहीं लौटी भीड़
अपने घरों में बन्द होने के इरादे से
तो छिप गया राजा
काठ के घोड़े के पेट में
इस बार भीड़
लपटों में बदलती जा रही थी।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

राक्षस

एक दिन उसके सपने में
सफेद बालों में लिपटा
एक राक्षस उतरा
और बोला —
"कल सुबह तुम्हारे आंगन में
ज़ोर का धमाका होगा
और एक सुरंग का मुँह
खुल जाएगा
आप ही आप,
पीले रंग का घोड़ा निकल कर
हिनहिनाएगा
उसी सुरंग में से
तुम्हारे सामने,
पकड़ लेना तुम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

झपट कर उसे
और चढ़ जाना
उसकी चमकदार
स्वर्ण-पीठ पर
और दौड़ पड़ना
हाथ में भाला लिए
दिग्विजय करने ... ...
विजय होगी तुम्हारी।"

सपना सच निकला
... ...।

उसने बहुत सारे
खेतों की मेंड़ पर
अपने नाम की झण्डियाँ गाड़ दीं
रखवाले भाग गए
अपनी पत्नियों-बच्चों के साथ
नदी के पार
जो सोते रहे मचान पर
उन्हें मार दिया उसने
भाले की नोक से,
फिर पीने लगा शराब
वहीं कीचड़ से थोड़ा परे हट कर
चिल्लाने लगा ज़ोर-ज़ोर से
बे-मौत मार दिए गए
लोगों के शवों पर
नाच-नाच कर ... ...।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

कि तभी
उतर आया फिर
वही राक्षस
न्यायाधीश का कोट पहने,
कब्रिस्तान के
किनारे खड़े
सूखे पेड़ के
तने पर फिसलते हुए,
ले गया उसे
पीठ पर लाद कर
अपनी पसंद के शहर की ओर
फिर सुना लोगों ने
कि शहर भर के सो जाने के बाद
अंधेरे बन्द तहखाने में
कार्यवाही हुई न्यायालय की
दीवारों पर मुद्दत से टँगे
बदरंग चित्रों में क़ैद
आदमियों की आकृतियों ने
फफूंद भरे मुँह से
दोनों ओर से की बहस
बे-जान
बे आवाज़,
सीलन भरी भाषा
घूमने लगी
न्याय की कुर्सी के नीचे
और न्याय किया न्यायाधीश ने —

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कि "शहर भर के लोग
अपने-अपने घरों में दबे
ज़ंग लगे चाकू
तेज़ कर लें पत्थर पर रगड़ कर
और इकट्ठे हो जाएँ
एक खास चौराहे पर
अपराधी वहाँ
घुटनों तक ज़मीन में गड़ा होगा
सब लोग
अपने-अपने चाकू
उतार दें उसके शरीर में
एक साथ।"
इसके बाद दोस्तों!
कुछ ऐसा हुआ
कि राक्षस और अपराधी
साथ-साथ
अपने-अपने घरों की ओर लौट गए।
अगली सुबह
अखबार में छपा —
"देश भर में
पुलीस की गश्त तेज कर दी गई है।"

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

भाषा : स्त्री : कवि

भाषा जगाती है एक आदमी
जंगल में
आग की आवाज़ें भर जाती हैं
आदमी
नदी की ओर दौड़ जाता है
मैं देखता हूँ
अपने भीतर जनमते
मटियाले आकाश में
अग्निगर्भा आकृतियों को
अनथक दौड़ते हुए
और सुनता हूँ
अपने भीतर तैरते
चमकदार बालू पर
आदमी के पैरों के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जादुई निशान।
हे मेरी भाषा
मेरी प्रेयसी हो तुम
मेरा साथ दो ;
रात के उस पहर में
जब कोई स्त्री
नाखूनों के विरुद्ध लड़ते हुए
निढाल हो जाती है
और अपनी पूरी ताक़त से
दीवार से टकरा जाती है,
विधान-सभाओं को
कुछ देर के लिए
हिला देती है
उसके खून की आवाज़
फिर जैसे
सब शान्त हो जाता है
सब ओढ़ लेते हैं चुप्पी
सिल जाते हैं
सबके ओठ,
ऐसे ही समय
मैं आना चाहता हूँ बाहर
सड़क और
चौराहों पर
तोड़ डालना चाहता हूँ
कारों के शीशे
इमारतों की खिड़कियाँ

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra
सिपाहियों की
बेजान मस्कटें
और तुम्हारा
ग़लत इस्तेमाल करते
नेताओं के जबड़े,
ये सभी खड़े हैं
एक स्त्री के विरुद्ध,
इस आत्महन्ता देश में
जल रही है आग
चारों तरफ़
और फैल रही है बालू
अजगर की तरह।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बच्चे

मत रोको बच्चों को
खेलने से
दौड़ने से
चिड़िया की तरह
फुदक कर
नाचने से
सड़क में, खेत में, घर के आंगन में।
रोको मत बच्चों को
माँ की रुई सी कोमल गोद में
किलकारियाँ भरने से
हँस कर उछलते हुए
माँ का स्तन
मुँह में भरने से
उत्साह में भर कर

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

माँ की गर्दन
नन्हें कोमल हाथों में लपेटने से।
बच्चों को मत रोको
एक-दूसरे के साथ खेलने से
एक-दूसरे के घर जाने से
एक-दूसरे पर रंग फेंकने से।
मत लागू करो बच्चों पर
कोई भी निषेधाज्ञा
उनकी इच्छा के विरुद्ध।
बच्चों के कारण
सुगन्ध में नहा उठती है सुबह
आकाश
बादलों के फूलों का घर हो जाता है
सूरज की किरणें फसलों को चूमने लगती हैं
बच्चों को मचलता देख कर।
शाम होते ही
घर लौटने की याद दिलाते हैं बच्चे
बच्चे हमारा गुस्सा पी जाते हैं
अपनी तोतली मुस्कान की —
चम्मच में भर कर।

सारे संसार को
प्रेम और उल्लास का
अमृत बाँटते हैं बच्चे
वे हमारे गालों पर
मीठी पप्पी का
गुलाल मलने के बाद
हमसे आग्रह करते हैं
कभी युद्ध न करने का।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
अपने छोटे से बस्ते में
हमारा उतता सारा बचपन भर कर
हमारे ही सामने
स्कूल की ओर दौड़ जाते हैं बच्चे
वहाँ उसे फिर से पढ़ते हैं वे
फिर घर आकर सुनाते हैं बच्चे
हमसे हमारा बचपन।
हमारी उँगली पकड़ कर
हमें मेले की ओर
धकेल ले ज़ाते हैं बच्चे
वे नहीं देखते
कि मेले में
क्या बिक रहा है?
वे तो बस सारा मेला
अपनी जेबों में भर लेना चाहते हैं
हम विवश हो जाते हैं
उनके सामने
अपनी जेबें टटोलने और खाली करने के लिए
मेले से खुश-खुश
लौट आते हैं बच्चे
फिर वे सबको
सुनाते हैं कहानी —
मेले की कहानी।
मत प्रतिबन्धित करो बच्चों को
उन पर पहरा बिठाने से
गूँगे हो जाएँगे वे
बच्चों के गूँगा होते ही
मर जाएगी दुनिया।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

नन्हीं बालिका

हरे पेड़ की बाँहों में वह
लाल फ्रॉक में सजी बालिका
झूला झूल रही मस्ती में
क्रीम-काँच से पैर हिलाती
ऊपर से नीचे जब आती
आँख मीच लेती है
बरबस मेरी
नज़र खींच लेती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

देश

कैदखाने में छपे
अखबार की
कतरन पढ़ें,
दूरदर्शन में बढ़ा है —
देश, अब
हम भी बढ़ें।

कम्प्यूटरों से नाप कर
बूढ़े दिलों का
दर्द
झुर्रियों में
लिख रहे
अगली सदी के रूप को,
इतिहास की
बहती नदी को ढक लिया

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

जिसने

कौन पहचाने
भला उस
रंगधर्मी धूप को,
अमर-बेलों पर लिखे
संवाद के
कन्धे चढ़ें।
शब्द की परछाइयों से
ढक गए चेहरे
सभी
खून की
नीलामियों से
पेट भरती पीढ़ियाँ,
रोटियों को
टांग कर आकाश-गंगा
के सिरे
मांगने
राजा गए हैं
भूख के घर सीढ़ियाँ,
रेत के कंकाल, काले —
फ्रेम के
भीतर मढ़ें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मेरा दौर

ये मेरे दौर की
एक अजब रीत है
सिर मुनासिब नहीं
आदमी के लिए
अंजुरी में
अगर आप
ढल जाएँ तो
कुछ अधिक ठीक है
ज़िन्दगी के लिए।
कुछ बड़ी कुर्सियाँ हैं
सजी मंच पर
जिन'प पधरे हुए
काठ के देवता
कुछ बिना रीढ़ के

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

लोग हैं बन गए
इनकी, अंधों की
बहरों की बैसाखियाँ,

गाँव मेरा तो
सारा ही चारण हुआ
लोग ज़िन्दा हैं
अपनी
खुशी के लिए।

शेयरों का यहाँ
एक बाज़ार है
चार जो है, वही तो
ख़रीदार है,
हर सुबह लोग
बिकते हैं तरतीब से
आदमी सिर्फ
क़स्बे का अख़बार है,

कुछ तो ऐसे हैं
जैसे वे क़ालीन हों
बिछ रहे
रास्ते में
सभी के लिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अक्षरों की आँख में है आग

अक्षरों की आँख में
है आग
अब हम क्या करें,
देश को लीले हुए
है नाग
अब हम क्या करें।

सिर्फ़ अपनी ओर हम
बहते रहे
दिन-रात
और सूरज
कैद में ही मर गया,
भेड़ियों ने दोस्ती
गाँठी अंधेरों से

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

भेड़ सा दिन
हड्डियों तक
डर गया,
दोपहर का मुँह
उगलता झाग
अब हम क्या करें।

रोशनी के गर्भ में
पलता रहा
जो देश
आज उसके
स्वप्न क्यों बीमार हैं,
क्यों हवाओं में
घुली है मृत्यु की दुर्गन्ध
हम सवालों
में घिरे
लाचार हैं
अँगुलियों पर
चीखते हैं दाग
अब हम क्या करें

आज अपना खून ही
षड्यन्त्र के
हाथों बिका
सिसकियाँ भर
रो रही चौपाल है,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

व्याम तक को
बाँटने में जुट गए गद्दार
झील तक का
जल हुआ
अब लाल है,
धर्म गाता है
घृणा का राग
अब हम क्या करें।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

तुम्हारे नाम

वे गुलावी दिन
    तुम्हारे नाम
        जिनके वक्ष पर चिन्हित
हमारा प्यार है अभिराम।

याद की कोयल बनाती
    धूप पर कुछ चित्र
        गाती गीत मेरे
मैं कमल-वन के उसी
    संकेत पर फिर
        आ गया इतने सवेरे,
आम का वह बौर
    जिसको चुम्बनों से भर
        मुझे तुमने दिया था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

आज तक
        दहका हुआ है इस हथेली पर
                सुनो ओ प्राण मेरे,
जल-परी के कर्ण फूलों
        में झलकती शाम,
वे गुलाबी दिन
                तुम्हारे नाम।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

घाटी का गाँव

अनमना सा धान का पौधा
समूचे गाँव का चेहरा।
    पोखरी का जल बुलाता
    शाम के कुछ रंग
                अपने घर
    मछलियों की आँख में
    घुलने लगी
                दिन की व्यथा,
    धूप वृद्धा देखती है
    शून्य में
                भवितव्य को
    रेत की लहरें सुनातीं
    सूर्य को
                मन की कथा,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

तैरता है झील के जल में
पारदर्शी छाँव का चेहरा।

झोंपड़ी के शीश पर
चढ़ कर धुँआ
गाने लगा
घाटियों के पैर में
बजने लगी
आग की पायल,
पगडण्डियों पर
दौड़ती है
बाँसुरी हिरनी
पात का मन
हो रहा है
टेर से घायल,
गन्ध पलकों में छिपाए है
अजाने ठाँव का चेहरा।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

मन-गुलाल

रंगों की लेकर
गलबहियाँ
इतना नाचो तुम
मेरे मन,
आँखों में गोकुल झूम उठे
प्राणों में झूमें
वृन्दावन।
यह धरती
सागर सी लहरे
इतना रस इसमें
भर जाए,
मादकता बरसे अम्बर से
यह देह
डूब कर
उतराए,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

साँसों में वंशी
टेर उठे
गल कर छितरें
सारे बन्धन।
फूले पलाश के
गीत सुनें
तव गानें लगें
दिशाएँ भी,
चन्दन वन की भीनी सुगन्ध
बिखराने
लगें
हवाएँ भी।
फागुन का फाग
बने, बहके—
सौरभ-गुलाल
भीगा जीवन।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

रंगों की सीपी

मुझसे मेरे मन ने पूछा—
होली की क्या परिभाषा है
मैं बोला——केवल मादकता
बस, इतना अर्थ ज़रा सा है।

रंगों की सीपी से निकला
यह प्यार भरा झिलमिल मोती
हम ज्यों ही गले मिले ——— हँस दी
वह आँख अभी थी जो रोती
छन्दों की भाषा मौन यहाँ ———
पलकों की मधुमय भाषा है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
गेहूं की बालों का यौवन
सरसों के पग की बन पायल
लय-ताल साधता बेसुध हो
सबका अन्तर करता घायल
दीवारें सब वह जाती हैं
रंगों का अजब तमाशा है।

C-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

प्रकृति के रंग

अरहर की यौवनोन्मादित
पत्तियों के साथ
आइस-पाइस खेलती ज्योत्स्ना
बीच-बीच में
ताली बजा कर हँस पड़ती है
भोली ग्राम्य-बाल सी।

...

क्षितिज के घर में उषा
सौंप रही है अपने को
प्रातः के हाथों
जीवन भर के लिए
बिना किसी प्रतिदान की कामना के।

...

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

शिवालिक की पहाड़ियाँ
चीड़-वन की ढोलक पर
गा रही हैं
रंग भरे लोक-गीत
हिमालय को रिझाने के लिए।

...

भीलों ने तान खींची
जंगल भर झूम उठा
वन-पाखियों ने नाच-नाच
साथ दिया भरपूर।

...

बरसायीं आकाश ने
ओलों की गोलियाँ
गिर रहीं निंबोलियाँ
नीम की शाखाओं से
घायल तड़पती
धरती पर पटापट्
दौड़ रही तड़ित
गिनती में व्यस्त
इधर से उधर
गरज-गरज बादल
दे रहा निर्देश।

...

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

घर से भागा
बादल-बाल-समूह
रच रहा
अनोखा आकाश
ताल के
नीले कैनवस पर।

...

माघ की ओस में
ठिठुरता हुआ
मिट्टी का ढेला
गिड़गिड़ा रहा है
सूरज के सामने,
किरणें उसकी
हँसी उड़ा रही हैं।

...

हिम-गाँवों से
घूमधाम कर लौटी हवा
ठुमक-ठुमक कर
ढुलका रही है
शीतलता
क्यारियों में
आकाश के हजारे से।

...

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कोकिल के स्वर में
संगीत-बद्ध निमन्त्रण
वसन्त के
स्वागत समारोह का
सार्वजनिक आयोजन।

...

कुएँ में नहाने को
उतरता हुआ डोल
सुन रहा चुपचाप
रस्सी के कानों से
लाल चूड़ियों की खनक
वसन्त में।

...

फागुन के अधरों पर
गाने लगी बाँसुरी
सरसों के फल
बनाने लगे
कृष्ण की आकृति।

...

ईख-कुल-मध्यं
सयानी ईख-वधू
छिपाते हुए आवेग
अनुमान रही फागुन की अवधि
हो रही भीतर
रंग में सराबोर।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

नम्बूल[1]

स्वर्ग लौट जाने की
राह गई भूल
आकर्षण की मदिरा में
डूबी नम्बूल

चांदनी के हाथों
नहाती रही दूध से
रात भर, अनचक ही—
नींद खुली उदयाचल को
देखता ही रह गया,
कूल-कूल बाँसों के
झुण्ड खड़े छेड़ रहे
फेंक-फेंक कंकड़ सी
पीली-पीली पत्तियाँ,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
उर्मियों के हाथों
बार-बार संभालती
प्रातः की धूप का
सिंदूरी दुकूल

आकर्षण की मदिरा में
डूबी नम्बूल
स्वर्ग लौट जाने की
राह गई भूल।

1 — मणिपुर की एक प्रसिद्ध नदी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लोकलाक[1]

जिसकी आँखों में समा पाए
जितना विस्तार
जल की आँखों में उतना ही
उसका संसार

झोंपड़ियों की बैलगाड़ियाँ
एक छोर से
उधर दूसरे, सघन
किनारे ले जाने को
काले सींग हिलाते
हौलि खड़े हुए
बादल के, धौले —
कबरे बैल
नावों में बैठी किन्नरियाँ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जल की झिलमिल
नील सतह पर
तैरातीं परिहास, मधुर
गीतों के धागों से
निर्मित इल[2] में
उलझातीं मीन,
वायु के हाथ पातियाँ
भेज बुलाते
लहर यौवनाओं को
कमल-वनों के बीच
मिलन के इच्छुक
व्याकुल शैल

जिसका लहरों की मन-देहरी
जितना अधिकार
जल की आँखों में उतना ही
उसका संसार।

1 — मणिपुर की विश्व प्रसिद्ध झील, जिसके जल में घास के नन्हें-नन्हें द्वीपों पर झोंपड़ियाँ बनाई जाती हैं। इस झील के साथ अनेक ऐतिहासिक व पौराणिक प्रसंग जुड़े हुए हैं।

2 — मछली पकड़ने का विशेष प्रकार का जाल।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

थोह्वी[1]

दिग् दिगन्त
नहीं अन्त
मेघ बौर
ठौर ठौर
किरण डोल
रसिक बोल
अधर पान
प्राण प्राण

सुर बाला वह पवन–पुष्प
की चंगेरी ले डोलती
बादल खम्ब[2] परस देता
अन्तर की गाँठें खोलती।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पीड़ा की लहरें
पोर पोर ठहरें
आगी में दहना
कितना कुछ कहना
हृदय की परीक्षा
व्योम भर प्रतीक्षा
जनम भर हताशा
साँस भर निराशा

नोङ्बान[3] की प्यासी आत्मा
है जग भर दुखड़ा तोलती
पी-थादोइ[4] बन वन-उपवन
भर फिरती पिय-पिय बोलती।

---

1 — सर्वाधिक प्रसिद्ध मीतै लोक-प्रेमाख्यान "खम्ब-थोइबी" की नायिका।

2 — खम्ब-थोइबी प्रेमाख्यान का नायक।

3 — खम्ब-थोइबी प्रेमाख्यान का प्रति-नायक। वह थोइबी को बहुत प्रेम करता था।

4 — कहा जाता है कि अपनी मृत्यु के बाद नोङ्बान एक चिड़िया बन गया था और पी-थादोइ, पी-थादोइ बोल-बोल कर जंगल में उड़ता फिरता था। यह चिड़िया आज भी है। इसका नाम ही पी-थादोइ है। कहा जाता है कि उसके रूप में नोङ्बान आज भी थोइबी को पी-थादोइ कह कर बुलाता रहता है।

यह कल्पना सबसे पहले मणिपुरी भाषा के कवि ख्वाइराक्पम चाओबा ने की थी। बाद में कवि मीनकेतन ने भी इसी प्रकार की कल्पना की।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

खोङ्जोम लुरेल[1]

जिसकी साँसों में पूरी एक सदी पिघली है
जिसकी धड़कन में इतिहास हँसा-रोया है
जिसकी छाती से सोते फूटे करुणा के
जिसकी ध्वनियों में उल्लास खेल सोया है

जो साक्षी है अंगार भरी उस आंधी की
जिसने पृथ्वी को थर-थर थर्राते देखा है
जिसने देखी रणभेरी में नाच रही इच्छा
जिसने बलि को हुंकार उठाते देखा है

जिसने चाहा पाओना[2] महाकाल बन जाए
जिसनें भूधर पर काल नाचते देखा है
जिसने भिड़ते देखे तोपों से उद्धत खड्ग
जिसने विधि को वह युद्ध बाँचते देखा है

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जिसकी देह रक्त में डूब-डूब उतराई थी
जिसकी बाँहों में अनगिन लाशें झूली थीं
जिसके अपने पुत्र युद्ध-ज्वाला में खेत रहे
पर जो साहस की सीमा कभी न भूली थी

है आज वही कृश-काय दुखी
वृद्धा सी आँखें बन्द किए
आँसू भी लगता सूख गए
दिखती है जैसे होंठ सिए

क्या विगत सदी की पीड़ा में
साँसें घुटतीं भीतर-भीतर
संग्राम विफल हो जाने की
वह हूक जलाती है अन्तर

क्या याद उसी क्षण को करती
जो बना पराजय-विष-प्याला
जो बना दासता का कारण
जीवन-माथे काला छाला

क्या शूल अभी तक चुभता है
क्या प्राण अभी तक गलते हैं
क्या हृदय अभी तक घायल है
क्या रोम अभी तक जलते हैं

या डूबते हैं प्राण उसके फिर निराशा के अंधेरे में
देख कर सन्तान अपनी जो निरन्तर हो रही दिशिहीन है
छोड़ कर कर्तव्य-पथ जो उस विषैले मार्ग पर है चल रही
धूम है जिसमें भरा बस स्वार्थ का, अज्ञान का, अविवेक का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

रात-दिन ही जो रहे जो मात्र अपने क्षीण लाभों के लिए
वे भला निज देश के, निज जाति के किस काम आएँगे कभी
कौन सींचेगा प्रगति के पुष्प को निज रक्त से, निज स्वेद से
प्रश्न ये ही सालते, नैराश्य होता, फूट पड़तीं सिसकियाँ

एकता, बन्धुत्व, समता के गले में बांध दी हैं रस्सियाँ
सूत जिनमें है लगा विद्‌वेष, अवसरवाद का औ भेद का
व्यर्थ ही अभिशप्त हैं हम बस परस्पर नित झगड़ने के लिए
सोच करती—"भेंट देकर हैं गए यह श्वेत मुँह के आदमी"

किन्तु अब सन्नद्ध होकर तोड़ने होंगे अंधेरे गढ़ सभी
मूल से ही काटना होगा अनय, अन्याय, शोषण, भेद को
सूख जाएगा शिराओं में प्रवाहित रक्त इसकी अन्यथा
और फिर इतिहास को यह मूक साक्षी एक दिन मिट जाएगी

---

1 — खोङ्‌जोम मणिपुर के एक जनपद-मुख्यालय, थौबाल से कुछ दूर स्थित एक गांव का नाम है। तुरेल का अर्थ होता है, नदी। इस गाँव के पास बहने वाली नदी को "खोङ्‌जोम-तुरेल" (खोङजोम नदी) कहा जाता है। यह नदी मणिपुरी लोगों द्‌वारा अंगरेज़ों के विरुद्‌ध किए गए सन् 1891 के स्वतन्त्रता-संग्राम (जो खोङ्‌जोम-युद्‌ध के नाम से जाना जाता है) की साक्षी है। इस युद्‌ध में मणिपुर की पराजय हो गई थी और इस क्षेत्र पर अंगरेज़ों का प्रभुत्व स्थापित हो गया था। युद्‌ध के समय खोङ्‌जोम-तुरेल बड़ी रही होगी, किन्तु अब यह अत्यन्त क्षीण धारा वाली रह गई है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

2 — सन् 1891 के युद्ध (खोङ्जोम युद्ध) का मुख्य सेनापती, जो इस युद्ध में खेत रहा।

3 — मणिपुरी भाषा में अंगरेज़ों को "मलेच्छ", "गोरा" आदि शब्दों के साथ "मी अङौबा" (सफेद जाति का आदमी) कह कर भी सम्बोधित किया जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

छम्पकाल

वैसे तो
इतिहास की जादुई कोख से
पैदा हुआ शहर है यह
लेकिन
है एक दम उलझा हुआ
जैसे चारपाई बुनते हुए
बान की बिण्डी उलझ गई हो।
कभी-कभी मुझे
पीढ़ियों पुरानी
काई चढ़ी बावड़ी के जल सा
ठहराव तैरता लगता है
इस शहर के सीने पर
यूनियन कार्बाइड के अजगर की
ज़हरीली लपटों में धुआँ होते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
बच्चों की तड़पन
बाबा आमटे की नर्मदा के रुदन
सुन्दरलाल बहुगुणा के जंगलों की सिसकियों
और थ्येनआनमन चौक पर
साम्यवादियों की पोशाक में छिपी
फासिस्ट बन्दूकों से भून दिए गए
छात्रों की माताओं की चीखों से
पूरी तरह बेख़बर लोग
खुदइ[1] पहने हुए
घरों के पिछवाड़े बाँस काटने में लगे रहते हैं
बड़े-बड़े कलश लिए
फ़नेक[2] घुटनों तक समेटे लड़कियाँ
सड़क के किनारे वाले गड्ढे में छिपी टोंटी से
पानी भरने के लिए
अपनी बारी की प्रतीक्षा करती हैं
और खाली समय में
वार-सिमेट्री[3] की बाड़ के पास
हरी घास का तिनका
नाखूनों के बीच दबाए
अपने प्रेमियों के साथ
योजनाएँ बनाती रहती हैं
भागने की[4]
बच्चे
छोटी-छोटी साइकिलों पर
(और पैदल भी)
इधर-उधर उड़ते रहते हैं नंगे-बदन

तितलियाँ पछाड़ते हुए

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

आफिसों में सोए रहते हैं लिपिक
या फिर
रिश्वत तय करते रहते हैं आराम से।
फिर कभी अचानक जाग जाता है यह शहर
इमा मार्केट[5] की सारी महिलाएँ
बदल जाती हैं जुलूसों में
पता नहीं किस दिशा से
फूट पड़ती है आग
सड़कें और इमारतें
काँपने लगती हैं फौजी बूटों से
घरों के बाहर बुला लिए जाते हैं लोग
स्त्रियों और बच्चों को
डरी हुई आँखों के सामने
पुलिस और सेना के जवान
पूछ-ताछ करते हैं
बाँस और मिट्टी की दीवारों से
उनके बारे में
जो बदलाव के पक्षधर हैं
बन्दूक की नली पर बैठ कर
लारियों में भर कर
ले जाए जाते हैं युवक
अज्ञात दिशाओं की ओर
पीछे रह जाती है
सिसकती हुई एक बूढ़ी
अपने बेटे के लौट आने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

या फिर
अपने मर जाने की कामना करती हुई
समाचार पत्र
सच और झूठ की परवाह किए बिना
ख़बरें परोसने में जुट जाते हैं
लोगों के दिमाग की थाली में
हैम्बर्गर की शक्ल में,
थोड़ी देर बाद
फिर से सोने लगता है यह शहर
जैसे दमे का पुराना बूढ़ा मरीज़
खाँस-खाँस कर
बलगम से राख का कूण्डा भर देने के बाद
नींद को फिर से पाने की कोशिश में लगा हो
उसी समय
मैं सोचने लगता हूँ
भूख से निरन्तर पराजित होती देह वाली
एक स्त्री के बारे में
और उन लोगों के प्रति
क्रोध से फूलने लगते हैं मेरे नथुने
जो उलझे रहते हैं रात-दिन
संस्कृति और सभ्यता की
पवित्रता पर भाषण देने में
और भूल जाते हैं
कि उनके शब्द
बमों के खाली गोले हैं
जिनके फटने से कोई धमाका नहीं होता

न ही झनझनाती हैं
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
मेरे इस बीमार शहर की नसें,
फिर भी एक बात जरूर है –
साल में एक बार
वसन्त और फागुन घूम जाते हैं
इस शहर की गलियों में
जैसे दूर देश में नौकरी करने वाले लोग
छुट्टी में घर आते हैं साल में एक बार
उन दिनों
मेरे इस शहर के मरियल-कड़ियल लोग
(मर्द, औरतें, लड़कियाँ, बच्चे सभी)
चमकदार कपड़ों के नीचे
सारा मैल छिपा कर हँसने लगते हैं
थाबलचोङ्बा[6] में नाचने की
इच्छा के वशीभूत,
कभी-कभी वे
दौड़ते दिखाई देते हैं
लाइहराओबा[7] में बजते
पेना[8] की आवाज़ की ओर
या फिर
शुमाङ् लीला[9]
और जात्रा[10] में शामिल होने के लिए,
यही वे स्रोत हैं
जहाँ से जीने लायक प्राण-वायु
उधार लेता हुआ
मेरा यह शहर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अन्तिम साँस तक जीने के लिए
संघर्ष कर रहा है।
वैसे यह बिल्कुल सही है
कि इतिहास की जादुई कोख से जन्मा
पुराना शहर है यह।

---

1 — घुटनों तक पहना जाने वाला गमछे नुमा वस्त्र।

2 — मणिपुरी स्त्रियों का अधो-वस्त्र।

3 — द्वितीय विश्व-युद्ध में मारे गए सैनिकों का स्मृति-स्थल।

4 — मीतै समाज में गन्धर्व विवाह की परम्परा है। प्रेमिका अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है, जिसके बाद परिवारी-जन विधि पूर्वक उनका विवाह सम्पन्न करा देते हैं।

5 — महिला-बाज़ार, जो एशिया में सबसे बड़ा (महिला बाज़ार) माना जाता है। इसमें केवल स्त्रियाँ ही सामान बेचने का कार्य करती हैं।

6 — इसका शाब्दिक अर्थ है - ज्योत्स्ना भरी रात का नृत्य। मणिपुर में इस अवसर पर युवक-युवतियाँ वृत्त बना कर, एक युवक एक युवती के क्रम से एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर नृत्य करते हैं। यह आश्चयजनक संयोग है कि यह नृत्योत्सव होली के अवसर पर आता है।

7 — इसका शाब्दिक अर्थ है — देवता को प्रसन्न करना। इसमें वंश व ग्राम देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। नृत्य भी होता है।

8 — एक विशेष प्रकार का वाद्य-यन्त्र।

9 — एक लोक-नाट्य।

10 — शुमाङ्लीला का दूसरा नाम। यह नाम बंगला के प्रभाव का द्योतक है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

देवराज

जन्म : १९५५,
(नजीबाबाद, उ० प्र०)

[विक्षुब्ध वर्तमान, पदचिह्‌न बोलते हैं, तेवरी, मचान, कबीर जिन्दा है आदि संकलनों में अन्य कवियों के साथ उपस्थित। एकल रूप में यह प्रथम काव्य-संकलन।

उलझे शब्द, मीतै चनु,
आधुनिक मणिपुरी कविताएँ, फागुन की धूल, आदि काव्य-ग्रन्थों का सम्पादन।]

सम्प्रति। मणिपुर विश्व विद्यालय,
(कांचीपुर, इम्फाल-७९५००३)
के हिन्दी-विभाग में।